The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 1 | September 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

खगड़िया जिला अन्तर्गत ग्रामीण अधिवास एवं स्थानिक विश्लेषण

डॉ० अनिरूद्ध कुमार[1] एवं ललन कुमार[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्राचार्य
बी0एन0 कॉलेज, भागलपुर
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर– 812007
[2]शोधार्थी
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर– 812007

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 10/01/2025

स्वीकृति तिथि: 24/01/2025

प्रकाशनतिथि: 30/01/2025

मुख्य शब्द: ग्रामीण अधिवास, बाढ़, गरीबी, भूमि विखंडन और अपर्याप्त सिंचाई इत्यादि

सारांश

खगड़िया जिला बिहार राज्य के उत्तरी भाग में स्थित है, जो गंगा नदी के उत्तरी तट पर अवस्थित है। यह जिला मुख्य रूप से कृषि–प्रधान और ग्रामीण क्षेत्र वाला है, जहाँ बाढ़, गरीबी और परंपरागत कृषि प्रथाएँ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण अधिवास मुख्यतः कृषि योग्य भूमि, सिंचाई सुविधाओं और परिवहन की उपलब्धता पर निर्भर है। स्थानिक विश्लेषण से पता चलता है कि जिले के मध्य भागों में जनसंख्या और बस्तियाँ अधिक सघन हैं, जबकि उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों में बाढ़–प्रभावित भूमि और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के कारण कम घनत्व है। ग्रामीण अधिवास की प्रमुख समस्याएँ वार्षिक बाढ़, भूमि विखंडन, अपर्याप्त सिंचाई और किसानों की रूढ़िवादिता। स्थानिक विश्लेषण से पता चलता है कि कृषि विकास के लिए भूमि एकीकरण, सहकारी खेती और आधुनिक तकनीकों की आवश्यकता है। फसल विविधीकरण (नकदी फसलें), एग्रो–इंडस्ट्री (चावल मिलिंग, डेयरी) और ग्रामीण विकास योजनाएँ। व्यापक योजना से ग्रामीण अधिवास को सतत बनाया जा सकता है।

भूमिका :

ग्रामीण अधिवास से तात्पर्य उन मानव बस्तियों से है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होती हैं और जहाँ जनसंख्या मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन या अन्य प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर होती है। ये बस्तियाँ सामान्यतः छोटे आकार की होती हैं, जिनमें जनसंख्या घनत्व कम होता है और सामाजिक–आर्थिक संरचना सरल होती है। ग्रामीण अधिवास में लोग प्राकृतिक संसाधनों, जैसे उपजाऊ भूमि, जल स्रोतों और वन क्षेत्रों, के निकट रहते हैं, और उनकी जीवन–शैली परंपरागत और सामुदायिक मूल्यों पर आधारित होती है। खगड़िया जिला बिहार के उत्तरी भाग में गंगा नदी के किनारे अवस्थित एक प्रमुख कृषि–प्रधान क्षेत्र है। यह जिला अपनी ग्रामीण अधिवास संरचना के लिए जाना जाता है, जहाँ जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा (लगभग 94.77 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है।

खगड़िया में ग्रामीण अधिवास मुख्यतः गाँवों और पंचायतों के रूप में संगठित है, जो सात प्रखंडों (अलौली, खगड़िया, गोगरी, बेलदौर, परबत्ता, चौथम, और मानसी) में विभाजित हैं। ये गाँव उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों में बसे हैं, जहाँ कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ आजीविका का प्रमुख स्रोत हैं। लगभग 77 प्रतिशत कार्यबल कृषि में संलग्न है, और फसल पैटर्न में अनाज (जैसे धान, गेहूँ) का प्रभुत्व है। ग्रामीण अधिवास का स्वरूप भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित है। गंगा और उसकी सहायक नदियाँ (जैसे कोसी, बागमती) जिले की मिट्टी को उपजाऊ बनाती हैं, लेकिन वार्षिक बाढ़ ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती है। परिवहन और बुनियादी ढाँचे की कमी, विशेष रूप से बाढ़–प्रभावित उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों में, ग्रामीण अधिवास के विकास को सीमित करती है। स्थानिक दृष्टि से, ग्रामीण बस्तियाँ जिला मुख्यालय और उपजाऊ भूमि के निकट सघन हैं, विशेषकर खगड़िया और परबत्ता प्रखंडों में, जबकि चौथम और बेलदौर जैसे क्षेत्रों में बाढ़ और कम कनेक्टिविटी के कारण बस्तियाँ कम सघन हैं। यह परिचय खगड़िया के ग्रामीण अधिवास की संरचना, विशेषताओं और चुनौतियों को समझने का आधार प्रदान करता है।

अध्ययन क्षेत्र :

खगड़िया जिला उत्तर में सहरसा, पूरब में भागलपुर व मधेपुरा, दक्षिण में खगड़िया, पश्चिम में बेगूसराय तथा उत्तर–पश्चिम में समस्तीपुर जिला द्वारा घिरा हुआ है। (जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 1486 वर्ग किलोमीटर है) यह 24^0 43′ से 25^0 45′ उत्तरी अक्षांश एवं 86^0 20′ से 86^0 50′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। यह जिला ज्यामितीय आकृति की दृष्टि से लगभग समानान्तर चतुर्भुजाकार है। इसका कुल क्षेत्रफल 1486 वर्ग किलोमीटर है जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का 2.03 प्रतिशत है। समुद्र तल से जिले की औसत ऊँचाई 53 मीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले का कुल जनसंख्या 1666886 है जिसमें पुरूश 888786 (53.32 प्रतिशत) एवं स्त्री 783100 (46.97 प्रतिशत) है। वहीं ग्रामीण जनसंख्या 1579727 है जिसमें पुरुशों और महिलाओं की जनसंख्या क्रमशः 837281 और 742446 है, जबकि नगरीय जनसंख्या 87159 है जहाँ 46505 पुरूश एवं 40654 महिला है। यहाँ औसत साक्षरता दर 57.92 प्रतिशत है जिसमें पुरुश साक्षरता 65.25 प्रतिशत व स्त्री साक्षरता 49.56 प्रतिशत है तथा लिंगानुपात 886 और जनघनत्व 1122 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस जिले की स्थापना 30 अप्रैल, 1981 को हुई है जहाँ 2 अनुमण्डल एवं 7 अंचल है।

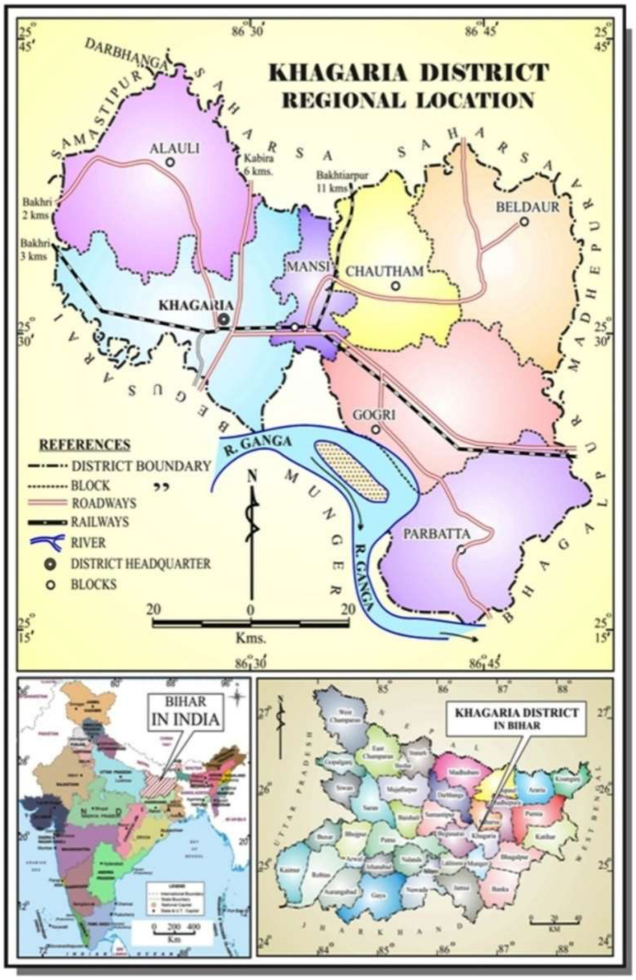

चित्र सं0 : 1.1

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत आलेख के अध्ययन में ग्रामीण अधिवासों से संबंधित उद्देश्यों को रखा गया है, जो निम्नलिखित है :–

- ग्रामीण अधिवासों के वितरण का अध्ययन करना।
- ग्रामीण अधिवासों का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या आधारित ग्राम्याकार प्राप्त करना।
- विभिन्न जनसंख्या समूह वाले ग्रामों की संख्या एवं इसके लिए जिम्मेदार विभिन्न कारक संपूर्ण ग्रामों से प्रतिशत प्राप्त करना।
- ग्रामीण अधिवासों का घनत्व एवं उत्तरदायी कारक तथा ग्रामीण अधिवासों के अन्तरण का विश्लेषण करना।

परिकल्पना :

किसी क्षेत्र का वैज्ञानिक अध्ययन परिकल्पना पर निर्भर करता है, जिसके अन्तर्गत क्षेत्र को प्रभावित करने वाले तथ्यों का सार समाहित होता है। प्रस्तुत अध्ययन निम्नांकित परिकल्पना पर आधारित है :–

- निम्न जनसंख्या समूह वाले ग्रामों की संख्या, मध्यम जनसंख्या समूह वाले ग्रामों की संख्या से अधिक होता है।
- जिन प्रखण्डों में अधिवासों का अंतरण उच्च होता है, उस प्रखण्डों का प्रति ग्राम जनसंख्या उच्च होता है।

साहित्य समीक्षा :

भारत में ग्रामीण अधिवासों के वितरण एवं ग्राम्याकार से संबंधित अनेक अध्ययनों का संपादन हुआ है। कुछ अध्ययनों को इन रूपों में देखा जा सकता हैः अहमद (1952) ने लघु स्तरीय अध्ययनों के आधार पर उत्तर प्रदेश में चारों प्रकार के ग्रामीण अधिवासों (सघन, अद्ध सघन, पुरवायुक्त एवं प्रविकीर्ण) का उल्लेख किया है। इसके उपरांत यादव (1979) ने निचले गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र के अध्ययनों मे 20 तहसीलों के 25 प्रतिशत प्रतिदर्श ग्रामों के आधार पर यादृच्छिकता के मान का परिसर 1.00 (कन्नौज) से 1.82 (सिरधू) के बीच प्राप्त किया है। इसी क्रम में सिंह (1985) ने बलिया जनपद के ग्रामीण अधिवासों का सामान्य वितरण एवं संस्थिति, ग्राम्याकार विश्लेषण (क्षेत्रफल एवं जनसंख्या आधारित), स्थानिक विश्लेषण, ग्रामीण अधिवासों के प्रकीर्णन की प्रकृति एवं ग्रामीण अधिवासों के प्रकार पर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किये हैं। इसके उपरांत रॉय (1989) ने फतेहपुर जनपद के ग्रामीण अधिवासों के वितरण प्रतिरूप के विश्लेषण में यादृच्छिकता, प्रकीर्णन की प्रकृति एवं अन्तरण पर प्रकाश डालने का प्रयास किये है। तत्पश्चात् तिवारी (2009) ने भी अपने अधिवास भूगोल में भारत के ग्रामीण अधिवासों के उ द्भव एवं विकास, वर्गीकरण, वितरण प्रतिरूप, प्रकार, ग्राम्याकारिकी, ग्रामीण सेवा केन्द्र एवं सेवा केन्द्र नियोजन पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। इसके उपरांत सिन्हा (2011) ने खगड़िया प्रमंडल के भौगोलिक पक्ष एवं मानव संसाधन से संबंधित नई सहस्राब्दी में सतत विकास को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसी क्रम मे चतुर्वेदी एवं मिश्रा (2011) ने गाजीपुर जनपद में ग्रामीण विकास के संदर्भ में ग्रामीण अधिवास का स्थानिक वितरण, ग्राम्याकार विश्लेषण, अन्तरण आदि का विस्तृत अध्ययन किये हैं। इसी क्रम में कुमार एवं सिंह (2017) ने खगड़िया जिला के ग्रामीण विकास के संबंध में जिले के भौगोलिक पृष्ठभूमि, मानव संसाधन, ग्रामीण अधिवासों का स्थानिक वितरण, ग्राम्याकार विश्लेषण, अन्तरण, सेवा केन्द्रों का नियोजन आदि का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किये हैं।

आधारभूत आँकड़े एवं विधितंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। ग्रामीण अधिवासों के वितरण, ग्राम्याकार, घनत्व एवं अन्तरण को प्रप्त करने के लिए भारतीय जनगणना (ग्रामीण ब्यौरा और प्राथमिक जनगणना सार), सांख्यिकी पत्रिका, जिला जनगणना पुस्तिका द्वारा द्वितीयक ऑकड़े प्राप्त किया गाया है।

ग्रामीण अधिवासों का स्थानिक वितरण :

खगड़िया जिला में भी अन्य क्षेत्रों की ही तरह ग्रामीण अधिवासों का सामान्य वितरण मुख्यतः भौतिक–पर्यावरणीय कारकों जैसे उच्चावच, जलापूर्ति, अपवाह प्रणाली, मृदा उर्वरता तथा सामाजिक–आर्थिक कारकों जैसे सुरक्षा, भूमि उपयोग, भू–धारिता, फसल संगतता, आवागमन संचार के साधनों, जनसंख्या घनत्व आदि से प्रभावित होता है। यही कारण है कि जिले के विभिन्न भागों में भौतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं में भिन्नता के कारण ग्रामीण अधिवासों का वितरण प्रतिरुप भी भिन्न–भिन्न पाया जाता है। मानव अपनी आवश्यकतानुसार अन्तर्सम्बन्धों एवं अन्तर प्रक्रियाओं के द्वारा सेवा कार्यों की स्थापना करता है। ये सेवा कार्य प्रतिष्ठान, अधिवासी जनसंख्या की आवश्यकता के फलस्वरुप अपने चतुर्दिक अधिवासों को भी सेवा प्रदान करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल राजस्व गाँवों की संख्या 301 है, जिसमें 245 राजस्व ग्राम आबाद तथा शेष 56 राजस्व गाँव गैर आबाद हैं। खगड़िया जिला, बिहार के सात प्रखंडों (खगड़िया, गोगरी, परबत्ता, अलौली, बेलदौर, चौथम, और मानसी) में ग्रामीण अधिवास का स्थानिक वितरण असमान है, जिसे सघन और विरल अधिवास के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रत्येक प्रखंड में भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के आधार पर अधिवास का स्वरूप भिन्न है :–

- खगड़िया प्रखंड : यहाँ सघन ग्रामीण अधिवास देखा जाता है, जहाँ जनसंख्या घनत्व 1,454 व्यक्ति/वर्ग किमी है। जिला मुख्यालय की निकटता, उपजाऊ भूमि, सड़क नेटवर्क और व्यापारिक गतिविधियों की उपलब्धता के कारण गाँव सघन और निकटवर्ती हैं। यहाँ 27 पंचायतें और 51 राजस्व गाँव हैं, जो कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था को समर्थन देते हैं।
- गोगरी प्रखंड : गोगरी में भी सघन अधिवास प्रचलित है, विशेष रूप से गंगा के किनारे उपजाऊ क्षेत्रों में। जनसंख्या घनत्व लगभग 1,200 व्यक्ति/वर्ग किमी है। यहाँ सड़क और रेल कनेक्टिविटी, साथ ही कृषि और व्यापारिक गतिविधियाँ, सघन बस्तियों को प्रोत्साहित करती हैं।
- परबत्ता प्रखंड : परबत्ता में सघन अधिवास पाया जाता है, जहाँ जनसंख्या घनत्व 1,266 व्यक्ति/वर्ग किमी है। उपजाऊ मैदानी भूमि और नहरों/ट्यूबवेलों से सिंचाई की उपलब्धता के कारण गाँव एक–दूसरे के निकट और सघन हैं। यहाँ कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ प्रमुख हैं।
- अलौली प्रखंड : अलौली में अधिवास मध्यम से सघन है, जहाँ जनसंख्या घनत्व लगभग 1,100 व्यक्ति/वर्ग किमी है। यहाँ 21 पंचायतें और 45 राजस्व गाँव हैं। उपजाऊ भूमि और सिंचाई की सुविधाएँ सघन बस्तियों को समर्थन देती हैं, लेकिन उत्तरी क्षेत्रों में बाढ़ के कारण कुछ हिस्सों में विरलता देखी जाती है।
- बेलदौर प्रखंड : बेलदौर में विरल ग्रामीण अधिवास प्रमुख है, जहाँ जनसंख्या घनत्व 927 व्यक्ति/वर्ग किमी है। बाढ़–प्रभावित क्षेत्र, खराब मिट्टी और सीमित परिवहन कनेक्टिविटी के कारण गाँव छोटे और एक–दूसरे से दूर हैं। यहाँ बुनियादी ढाँचे की कमी विकास को सीमित करती है।

  चौथम प्रखंड : चौथम में भी विरल अधिवास देखा जाता है, जहाँ जनसंख्या घनत्व 896 व्यक्ति/वर्ग किमी है। वार्षिक बाढ़, अपर्याप्त सिंचाई और कमजोर बुनियादी ढाँचे के कारण बस्तियाँ छोटी और कम सघन हैं। यहाँ 13 पंचायतें और 28 राजस्व गाँव हैं।
- मानसी प्रखंड : मानसी में अधिवास मध्यम से विरल है, जहाँ जनसंख्या घनत्व लगभग 1,000 व्यक्ति/वर्ग किमी है। यहाँ केवल 7 पंचायतें और 13 राजस्व गाँव हैं। बाढ़ और सीमित कृषि योग्य भूमि (3,896 हेक्टेयर) के कारण बस्तियाँ छोटी और बिखरी हुई हैं।

अधिवासों का आकार :

ग्रामीण अधिवासों के घनत्व तथा आकार का विश्लेषण अधिवास के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है जो अन्तरण से अन्तर्सम्बन्धित होता है। अधिवासों के घनत्व एवं अन्तरण के मध्य का सम्बन्ध स्पष्ट करता है कि गाँवों के अन्तरण का उसके क्षेत्रीय आकार से सीधा तथा उनके घनत्व से विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है (राबिन्सन एण्ड वारनेस, 1940, सिंह, आर० पी० बी०, 1977, सिंह, के० एन०, 1975)।

तालिका संख्या : 1.1

खगड़िया जिले में ग्राम्याकार (जनसंख्या एवं क्षेत्रफल पर आधारित), 2011

प्रखण्ड	ग्रामीण जनसंख्या	क्षे0 वर्ग किलो मीटर	अधिवासों की संख्या	प्रतिग्राम जनसंख्या	प्रतिग्राम क्षेत्रफल कि0मी0	अधिवासों का अन्तरण
बेलदौर	2,00,223	223.6	29	6904	7.71	0.55
चौथम	1,53,831	163.9	28	5393	5.85	0.49
मानसी	88511	70.0	13	6808	5.38	0.69
खगड़िया	3,31,952	259.4	50	6639	5.19	0.35

गोगरी	279017	240.8	67	4164	3.59	0.24
अलौली	2,82,127	274.5	45	6269	6.1	0.39
परबत्ता	2,44,727	241.0	69	3537	3.5	0.24

स्त्रोत – खगड़िया जिला जनगणना वर्ष 2011

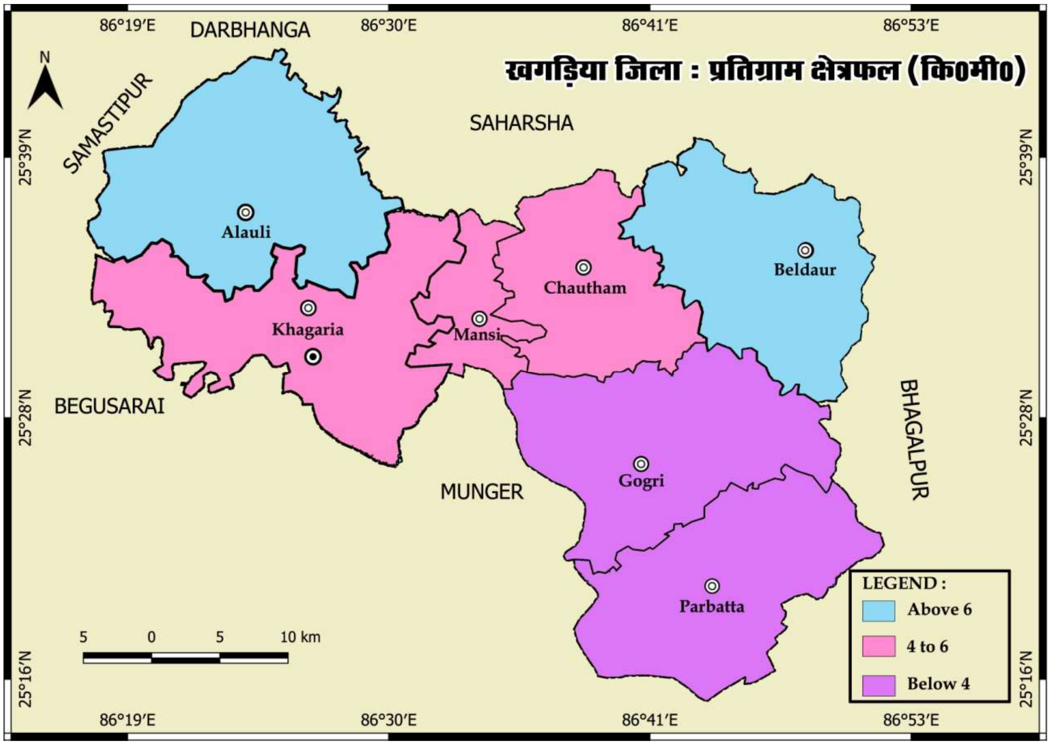

चित्र सं0 : 1.2

तालिका संख्या 1.1 एवं चित्र संख्या 1.2 से स्पष्ट है कि खगड़िया जिले के अधिवासों का अन्तरण 0.5 से अधिक मानसी एवं बेलदौर प्रखण्ड है, जबकि 0.25 से 0.5 मध्यम में चौथम, अलौली एवं खगड़िया प्रखण्ड का है। सबसे कम अधिवासों का अन्तरण गोगरी एवं परबत्ता प्रखण्ड का है।

प्रतिग्राम क्षेत्रफल (कि0मी0)

खगड़िया जिले में गाँव का औसत क्षेत्रीय आकार 4.93 वर्ग कि0मी0 पाया जाता है, जिनमें औसतन 5538 व्यक्ति निवास करते है। क्षेत्रीय आकार की दृष्टि से खगड़िया के प्रखण्ड को तीन भागों में बांटा जा सकता है, जिसे तालिका संख्या 1.1 एवं चित्र संख्या 1.2 से स्पष्ट देखा जा सकता है :–

1. **प्रतिग्राम बड़े आकार वाले प्रखण्ड** – इसके अन्तर्गत वैसे प्रखण्ड सम्मिलित हैं जहाँ प्रतिग्राम गाँव का आकार 6 वर्ग कि0मी0 से अधिक है इसके अन्तर्गत खगड़िया जिला के दो प्रखण्ड क्रमशः बेलदौर (7.71 वर्ग कि0मी0 प्रतिग्राम) तथा अलौली (6.1 वर्ग कि0मी0 प्रतिग्राम) आते है।
2. **मध्यम आकर** – प्रतिग्राम मध्यम आकार वाले प्रखण्ड इसके अन्तर्गत वैसे प्रखण्ड आते है जिसके ग्रामों का औसत आकार 4 से 6 वर्ग कि0मी0 प्रति ग्राम है। चौथम मानसी एवं खगड़िया उसका प्रतिनिधित्व करते है जहाँ प्रतिग्राम क्षेत्रफल का क्रमशः 5.85, 5.38 एवं 5.19 है।
3. **प्रतिग्राम छोटे आकर वाले प्रखण्ड** – वैवे प्रखण्ड जहाँ प्रतिग्राम छोटे आकार वाले गाँव जिले के औसत आकार 4.93 से भी कम है। इसके अन्तर्गत आते है जिनकी

संख्या दो है परबत्ता 3.5 एवं गोगरी 3.59।

तालिका संख्या : 1.2
खगड़िया जिला में जनसंख्या दृश्टि से ग्राम्याकार विभाजन, 2011

जनसंख्या समूह (व्यक्ति प्रति ग्राम)	ग्रामों की संख्या	संपूर्ण ग्रामों से प्रति�ात
01—200	03	1.00
200—500	02	0.66
500—1000	16	5.31
1000—2000	30	9.97
2000—5000	68	22.59
5000—10000	79	26.25
10000 से अधिक	27	15.61
कुल आबाद ग्राम	245	81.40
गैर आबाद ग्राम	56	18.60
खगड़िया जिला	301	301

स्त्रोत — खगड़िया जिला जनगणना वर्ष 2011

तालिका संख्या 1.2 खगड़िया जिले जनसंख्या दृष्टि से ग्राम्यकार विभाजन प्रस्तुत करता है। तालिका से स्पष्ट है कि यहाँ कि 18 प्रतिशत से अधिक गाँव बेचीरागी या गैर—आबादी गाँव है तथा छोटे गाँव जिनकी जनसंख्या 1000 से कम है कि संख्या 21 है। जहाँ सम्पूर्ण गाँव की कुल जनसंख्या का मात्र 7 प्रतिशत (6.97) ही जनसंख्या निवास करती है। दूसरी तरफ मध्यम गाँव के, जिनकी जनसंख्या 1000 से 5000 के बीच है कि संख्या 98 है। जहाँ कुल ग्रामीण जनसंख्या का मात्र 32.56 प्रतिशत निवास करती है, परन्तु बड़े गाँव जिनकी जनसंख्या 5000 ये अधिक है कि संख्या 106 है। अथात् सबसे अधिक और यहाँ सम्पूर्ण ग्राम की लगभग 42 प्रतिशत (41.86) जनसंख्या निवास करती है।

स्पष्ट है कि खगड़िया जिला में जनसंख्या की दृष्टि से गांवों का आकार बड़ा है, जबकि छोटे गाँव की न सिर्फ संख्या कम है बल्कि वहां प्रतिशत जनसंख्या भी कम निवास करती है।

ग्रामीण अधिवासों का अन्तरणः

ग्रामीण बस्तियों के वितरण प्रतिरुप के विश्लेषण में अन्तरण का विशेष महत्व है। इसके माध्यम से परिवहन, आधारभूत संरचनात्मक सुविधाओं एवं सेवा केन्द्रों के सुगठित तंत्र का विकास कर स्थानिक नियोजन को सफल बनाया जा सकता है। ग्रामीण अधिवासों के अंतरण में

मुख्यतः दो तथ्यों पर बल दिया जाता है (i) अधिवासों के मध्य दूरी पर बल दिया जात है तथा (ii) घनत्व अर्थात क्षेत्रीय इकाई में अधिवासों की संख्या (तिवारी, 2009)।

अधिवासों के मध्य दूरीः

विभिन्न विद्वानों ने अन्तरण हेतु विभिन्न सूत्रों का प्रतिपादन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण बस्तियों का अन्तरण ज्ञात करने के लिए निम्नवत सूत्र का उपयोग किया गया है (माथर, 1944)।

$$D = 1.0746\sqrt{\frac{A}{N}}$$

यहाँ, D = दो अधिवासों के मध्य परिकलित दूरी (अन्तरण)

A = क्षेत्रफल

N = प्रति क्षेत्रीय इकाई में अधिवासों की संख्या।

तालिका संख्या : 1.3

खगड़िया जिला में ग्रामीण अधिवासों का अन्तरण, 2011

श्रेणी	अन्तरण (कि0मी0)	विकासखण्ड
निम्न अन्तरण	0.25 या कम	गोगरी, परबत्ता
मध्यम अन्तरण	0.25—0.50	चौथम, खगड़िया, अलौली
उच्च अन्तरण	0.50 अधिक	बेलदौर, मानसी

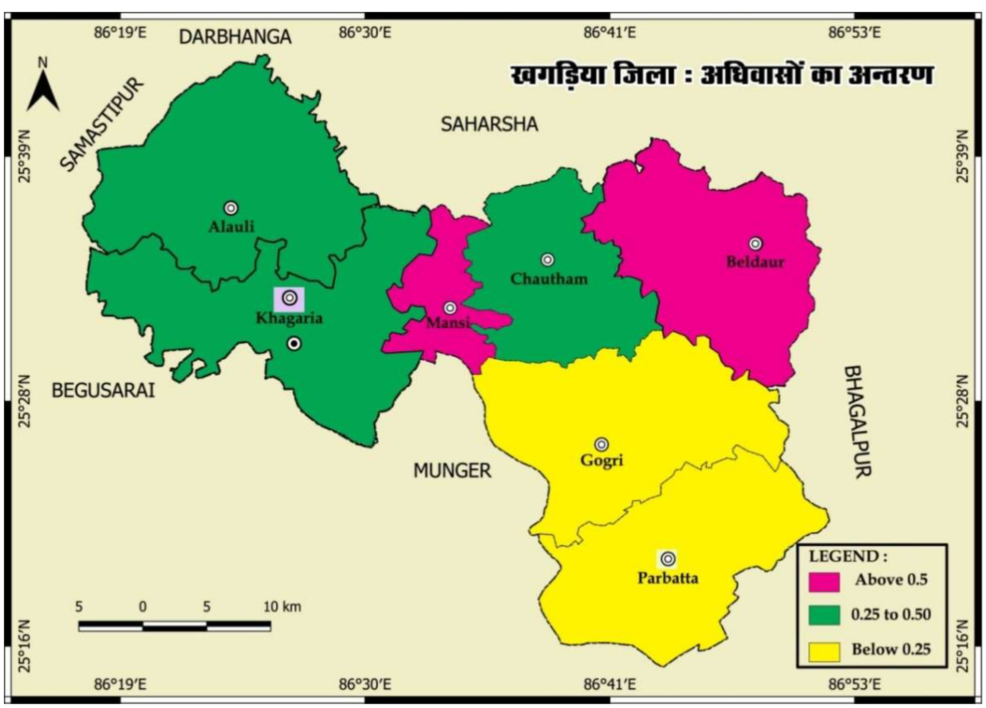

चित्र सं0 : 1.3

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिले में न्यूनतम अधिवास अन्तरण गोगरी एवं परबत्ता प्रखण्ड में है। दोनो ही प्रखण्डों का अधिवास अन्तरण 2.4 है। जबकि चौथम 0.49 खगड़िया 0.35 एवं अलौली 0.39 में मध्यम अन्तरण है। मानसी और बेलदौर प्रखण्ड उच्च अन्तरण वाले प्रखण्ड है जिसका अन्तरण क्रमशः 0.69 तथा 0.55 है।

निष्कर्ष :

खगड़िया जिले के ग्रामीण अधिवास एवं स्थानिक विश्लेषण के सम्यक अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि जिले में प्रखण्ड एवं ग्रामीण स्तर पर गांवों के न सिर्फ क्षेत्रीय आकार एवं उसमें निवास करने वाली जनसंख्या के आकार में विभिन्नता है, बल्कि अधिवासों के अन्तरण में भी पर्याप्त विभिन्नता है। जिले में गैर आबाद गांवों की संख्या 56 (18.60 प्रतिशत) है, जबकि कुल गांवों की संख्या 301 है। निम्न जनसंख्या समूह (0–500) ग्रामों की संख्या मात्र 21 है। जहाँ कुल जनसंख्या का मात्र 6.97 प्रतिशत निवास करती है, जबकि उच्च जनसंख्या समूह 5000 से अधिक वाले ग्रामों की संख्या 106 है, जहाँ सम्पूर्ण ग्रामों की 42 (41.86) प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। बाकी के 98 गाँव मध्यम जनसंख्या समूह वाले हैं, जहाँ लगभग 32 प्रतिशत जनसंख्या निवास करते है। अध्ययन क्षेत्र में प्रतिग्राम औसत 5538 एवं प्रतिग्राम क्षेत्रफल 4.93 वर्ग कि0मी0 है। ग्रामीण अधिवासों में इस प्रकार के विश्लेषण का विशेष महत्व है, क्योंकि उससे न केवल अधिवासों के वर्तमान प्रतिरूपों की जानकारी मिलती है, बल्कि इसके भावी स्थानिक प्रावृत्ति के बारे में भी अनुमान लगाया जा सकता है, जिसे किसी क्षेत्र विशेष के वर्तमान एवं भावी नियोजन में सहायता मिलती है।

सन्दर्भ–सूची :

1. Kumar, Aniruddh (2021) : Rural Population Towards Mobility, Shandilya Publication, pp. 104-126.
2. बंसल, एस० सी० (2003) : अधिवास एवं जनसंख्या भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ० सं० 97–145.
3. कुमार, प्रशंत एवं सिंह, उषाए 2017, खगड़िया जिला (द० बिहार) में ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक अध्ययन, पी० एच०डी० शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ० 118–122.
4. सिंह, राजशेखर (2006) : सगड़ी तहसील (जनपद–आजमगढ़) : ग्रामीण अधिवसीय अध्ययन, पी–एच० डी० शोध प्रबंध (अप्रकाशित), वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तरप्रदेश, पृ० सं० 205–207
5. सिंह, प्रदीप (2018) : सतना जिला ग्रामीण अधिवास का एक भौगोलिक अध्ययन, आई० जे० ए० आर० डी० जर्नल, वोल्यूम 3. इश्यू 5, पृ० सं० 74–78.
6. सिन्हा, कल्पना (2018) नवादा जिला के ग्रामीण अधिवासों का उद्भव, विकास एवं प्रकार– एक भौगोलिक अध्ययन, आई० जे० आर० एस० एस० जर्नल, वोल्यूम 8, इश्यू 11. पृ० सं० 1048–1055

7. कुमार, सुनिल (2019) मुजफ्फरपुर जिला ग्रामीण अधिवास का एक भौगोलिक अध्ययन, आई० जे० आर० एस० एस० जर्नल, वोल्यूम 9. इश्यू 1, पृ० सं० 1566–1571.
8. कटियार, आर० के० और कुमार, ललित (2019) : अधिवास की उत्पत्ति एवं विकास की सामान्य प्रक्रिया, पी० आर० एस०, जर्नल, वोल्यूम 5. इश्यू 2. पृ० सं० 1–10.
9. कुमार, सत्येंद्र, एल० बी० रावल और सिंह, सॉदन (2020) : जनपद रामपुर में ग्रामों का आकार एवं प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेशण, ग्रंथालया, जर्नल, वोल्यूम 8. इश्यू 7, पृ० सं० 46–49.
10. कटारा, पी० एल० (2020) : वागड प्रदेश में ग्रामीण अधिवास वितरण, आई० आर० सी० जर्नल, वोल्यूम 5, इश्यू 10, पृ० सं० 5–8.